ओम् शान्ति

21 सितम्बर 2013 ओ•आर•सी

ओ•आर•सी में दिल्ली ज़ोन की टीचर्स एवं भाई–बहनों के साथ परम आदरणीया दादी जानकी जी की मुलाकात

आज का दिन महान है और हम सभी मेहमान हैं, भगवान के प्लैन अनुसार आज हम सभी इकट्ठे हुए हैं। सब कुछ भगवान के प्लैन अनुसार हो रहा है। बाबा का प्लैन है और हमें प्लेन बुद्धि बनना है, तो सदा बेफिक्र रहेंगे। निश्चिन्त रहना है तो सच्ची भावना रखो और निश्चय बुद्धि बनो। कभी भी सेवा में ना नही करना है। ड्रामा की नॉलेज है, संगम है, अब घर जाना है यह सिर्फ रिपीट नहीं करना, रियलाइज करना है। बाबा ने क्या कहा है वह अनुभव करना है। दिल दर्पण में देखना है मेरे अन्दर कोई अवगुण तो नहीं। दिल्ली वाले रहम दिल और सच्ची दिल वाले हैं और क्या चाहिए? ड्रामा मॉ है, बाप है शिवबाबा और मैं हूँ बच्चा। ड्रामा को बाबा ने समझाया है कि तुम्हारा ड्रामा में क्या पार्ट है कहां बैठै हो। यहां तो सिर्फ निमित्त मात्र हैं, बाकी जहां का बाबा रहवासी है वहीं के हम रहने वाले हैं। ऐसी स्थिति बनानी है जो बाबा प्रत्यक्ष हो जावे।

दादी जी के साथ प्रश्नोत्तर

प्रश्न–दादी जी, व्यर्थ और फालतू में क्या अन्तर है?

उत्तर–बाबा जो कहता है वह करना है इसी में कमाई है, बाकी जिन बातों से मेरा कोई मतलब नहीं उनमें जाना फालतू है। किसी के बीच में बोलना, अपने को बड़ा समझना फालतू है।

प्रश्न–दादी जी, सूक्ष्म प्योरिटी की परिभाषा क्या है?

उत्तर–इम्प्योरिटी का वायब्रेशन से पता चलता है। जब हम सच्ची भावना से कार्य करते हैं तो अन्दर की प्योरिटी का पता चलता है, क्योंकि सच्ची भावना भी तभी काम करेगी जब हमारे अन्दर प्योरिटी होगी। हीरा माना सच्चा, कोई दाग नही। जितनी भी वैल्यूज हैं उन्हें धारण करने में प्योरिटी काम करती है। जहां पवित्रता है वहां सत्यता है। ब्रह्मा बाबा भी सत्यता को धारण करने से नारायण बना। लगााव कहां भी है तो लगन नहीं और प्योरिटी भी नही। मन, वाणी, कर्म और संबंध सबमें प्योरिटी हो। मनमनाभव तो बने, लेकिन अगर धनमनाभव हैं तो प्योरिटी नही है।

प्रश्न–दादी जी, अपवित्रता जितनी छोड़ चुके हैं उसका तो पता चलता है लेकिन जो रही हुई है मैं रूप में आती है उसका कैसा पता चलता है?

उत्तर–मैं और मेरापन बोलचाल से पता चल जाता है, ऐसे नही अभिमान वश ही मैं और मेरापन आता है। अगर साक्षीपन की दृष्टि में कमी होगी तो अभिमान वाला मैपन आएगा। बाबा साथी है और ड्रामा साक्षी है यह स्मृति रहे तो मेरापन समाप्त हो जाएगा।

प्रश्न–दादी जी, युक्ति और अपवित्रता में क्या अन्तर है?

उत्तर–युक्ति माना चतुराई से चलना। इसलिए युक्ति से नही विधि पूर्वक चलना है, भले कोई माने या ना माने कोई हर्जा नही, मेरी सच्चाई न जावे। अभी तक जो विश्व सेवाएं हुई हैं सच्चाई से हुई हैं।

प्रश्न–दादी जी, बाबा इकॉनमी और एकनामी पर ध्यान खिंचवाते हैं जो हम करते हैं, लेकिन गृहस्थी प्रश्न पूछते हैं कि इच्छा और आवश्यकता में क्या अन्तर है?

उत्तर–एक के नाम पर चलने वाला ही इकॉनमी से चलेगा। जो भी करती हूँ बाबा कराता है, किसी को दिखाने के लिए नही करती। ज्ञान योग का प्रत्यक्ष फल मिलता है। बाबा ने खुद का बचाकर हमें खिलाया, जान जिगर से हमारी पालना की है। इकॉनमी अगर नेचर नही होती तो कैसे इतना बड़ा कार्य होता। लण्डन में आज दिन तक सब काम अपने हाथों से करते हैं, काम वाले नही रखे जो पगार देनी पड़े।

प्रश्न– दादी जी, पहले किसी के भूल करने पर इशारा देते थे तो शुक्रिया करते थे लेकिन आज आत्माओं में वह ताकत नही क्यों?

उत्तर–अभी सावधान करने का समय नही है, सावधान रहने का समय है। अगर हम खुद टेन्शन में होंगे और दूसरों को टेन्शन फ्री होने का ज्ञान देंगे तो कोई हमारी बात नही मानेगा, इसलिए अपने पर अटेन्शन दो कि जैसा कर्म हम करेंगे हमें देख और करेंगे।

प्रश्न–दादी जी, सुख और खुशी में क्या अन्तर है?

उत्तर– खुशी बाहर से आती है और सुख अन्दर की चीज है, जो परमात्म शक्ति को खींचता है, कोई भी इच्छा पूरी न होने पर खुशी कम हो सकती है, सुख अन्दर से आता है। यह ज्ञान बड़ा रमणीक है गहराई में जाने का। सबसे अच्छा पानी कुएं का होता है जिसको निकालने के लिए गहराई में जाना पड़ता है, इसलिए हमें भी ज्ञान और योग की गहराई में जाना है।

ओम् शान्ति